Special Issue

Important Topic

66th BPSC PT Examination-2020

TOPIC:

बिहार की संगीत कला

संगीत को सृजनशील प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति का माध्यम कहा गया है। साथ ही यह सुगम मनोरंजन का साधन भी है। विभिन्न कलाओं को जन्म देने वाली बिहार की भूमि संगीत की भी साधना, समाहार और आविष्कार की भूमि रही है। बिहार में जन्में विद्वान ऋषि याज्ञवलक्य ने ही संगीत को सर्वप्रथम मुक्ति का मार्ग घोषित किया था। ऋषि भृगु, गौतम आदि के समागम से गुंजित आश्रयों से प्रवाहमान संगीत भारतीय जीवन और संस्कृति का अभिन्न अंग बना था। बिहार में प्राचीन काल से ही विभिन्न रागों का प्रचलन था जो विभिन्न संस्कारों के समय प्रयुक्त होते थे। मध्यकाल में बिहार के उदारमना सूफी एंव संगीत के आकर्षण से प्रभावित हुए। हिन्दी के मुस्लिम सूफी कवि शेख **कुतबन** ने अपने प्रेमकाव्य **'मृगावती'** में भारत पिंगल का उल्लेख किया है। उन्होंने **'किंगरी', 'बीन'** आदि कुछेक वाद्ययंत्रों के नाम भी गिनाए है जो गोरखपंथी साधुओं द्वारा व्यवहार में लाए जाते थे। कुतबन ने कुल **36** राग रागिनियों की चर्चा की है।

बाजे, साज, सबद, सह, थप्पई, चाव (छाव) सपरान राग अलापे और छत्तीस भरज अहा, अइन अेक राग पछ-पछ (पच-पच) कहा अइन। राग-रागिनियों के नाम इस प्रकार हैं:-

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

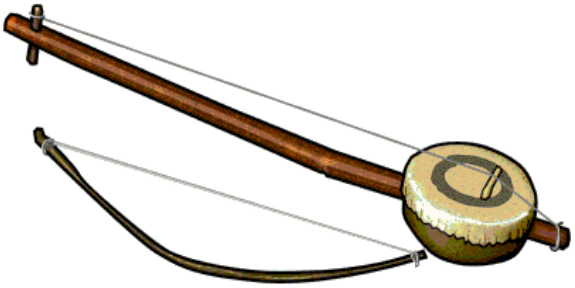

किंगरी

बीन

राग		रागिनी
भैरव	–	मध मालती, सन्धुरा, बंगला, वैराटिक, गुणकी।
कौशिकी	–	गौरी, देवकार (देसकार), तोड़ी, खंभावती, कुकुभ।
हिंडोल	–	देसाख, वैराटी, ननसहजगता, अवादी।
दीपक	–	कामोद, पटमंजरी, पंचवरांगना, केराय।
श्री	–	हेमकली, मतर, गूजरी, भुयुन (भीम), वितासी, खट्ट।
मेघ	–	मेहसरी, सारंगी, वरारी, धनाश्री, कन्धारी।

आदिकाल से ही एक न एक भाषा प्रायः समस्त उत्तरापथ में इस प्रकार प्रचलित रही है कि वह समस्त क्षेत्र की संस्कृति और कला को एकसूत्र में बांधकर रखे। बौद्धकालीन समय में यह काम किया बिहार में जन्मी पाली भाषा ने मध्यकाल में आकर यही काम ब्रज भाषा ने किया। फलतः जहां कहीं भी गीत रचित हुए उनकी भाषा ब्रजभाषा रही। भले ही उसमें कुछ स्थानीय शब्द या मुहावरे अवश्य आ गए।

बुद्धकाल में बिहार के राजगीर और वैशाली में गायिकाओं और नर्तकियों की उपस्थिति के प्रमाण मिलते है। इन्हें नगर शोभिनी कहा जाता था। विशाल साम्राज्यों के उदय के साथ राजनर्तकियों की परम्परा का और भी विकास हुआ। मध्यकाल में ही मिथिला साहित्य और संगीत का अजस्त्र स्रोत रहा। कर्णप्रिय मैथिली संगीत को लोग जीवन का अंश मानकर उसे विकासशील बनाते रहे। मिथिला के **कर्णाटवंशी शासक नान्येदव** ने रागों का सम्यक् विश्लेषण और इसका विभाजन कर राग-संगीत को नई ऊँचाई दी। उन्होंने संगीत विषय से संबंधित **'सरस्वती हृदयलंकार'** नामक एक पुस्तक की भी रचना की जिसकी पाण्डुलिपि पूना के भण्डारकर अनुसंधान संस्थान में सुरक्षित है। बिहार में तुर्क शासन की स्थापना के बाद सूफी संतों के माध्यम से संगीत की प्रगति हुई। वे धार्मिक गोष्ठियों और प्रवचनों के समय भजन और आध्यात्मिक गीत गाते थे जिन्हें सोम गायन कहा जाता था। वैष्णम धर्म सुधार आन्दोलन के माध्यम से भी नृत्य और संगीत दोनों का विकास हुआ। **मिथिलांचल के प्रसिद्ध कवि विद्यापति ने नचारी राग के गीतों का सृजन किया था।** विद्यापति के काल में समूचे बिहार में प्रत्येक पर्व-त्यौहार के अवसर पर ये गीत घर-घर गाये जाते थे। उन्होंने राग के गीतों की भी रचना की जो विवाह के अवसर पर गाये जाते थे। आज भी ऐसे शुभ अवसरों पर विद्यापति के गीत गाये जाते है।

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

Special Issue

18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य के पतनोपरांत शास्त्रीय संगीत पूरब की ओर प्रसारित होने लगा। शास्त्रीय संगीत के विशेषज्ञ दिल्ली से लखनऊ, बनारस, और बिहार की ओर प्रस्थान कर गये। **बिहार के विभिन्न राजघरानों यथा बेतिया, दरभंगा, बनैली, आरा, टेकारी, डुमरांव, पंचगछिया, चंपानगर, पंचोभ, सकरपुरा, बड़हिया, गया आदि ने संगीतकारों को अपने यहाँ आश्रय दिया।** प्रख्यात ध्रुवद गायक चमारी मल्लिक तथा बीनकार मल्लिक को बेतिया नरेश राजसिंह ने संरक्षण दिया। बाद में बेतिया नरेशों ने भी ऐसा ही किया। इस प्रकार से ध्रुपद गायन का तीव्र गति से विकास हुआ। 20 वीं शताब्दी में अमता घराने के राम चतुर मल्लिक सर्वश्रेष्ठ ध्रुपद गायक थे। गायन की पुरानी परंपरा के अनुकूल बंदिश के चारों तुक के रख-रखाव, राग की शुद्धता तथा लय की उन्नत सूझ-बूझ के साथ इनका गायन भाव के अनुकूल होता था। ये ठुमरी, टप्पा और ख्याल भी बड़ी ही कुशलता से गाते थे। अभिजात संगीत के अंतर्गत ख्याल और ठुमरी गायन की बिहार में एक समृद्ध परंपरा रही है। चूंकि इस समय तक पटना प्रमुख व्यापारिक केन्द्र के रूप में स्थापित हो चुका था तथा यहाँ कलाप्रेमियों की भी अधिक संख्या थी इसलिए पटना में इनकी शैलियों को विशेष लोकप्रियता मिली। पटना की जोहराबाई ठुमरी के लिए विशेष प्रसिद्ध थी। इसके अलावा चैती, कजरी तथा गजल आदि शैलियों को भी लोक गायिकाओं जैसे मोहम्मद बाँदी, रोशनआरा बेगम, रामदासी आदि ने लोकप्रिय बनाने में विशेष योगदान दिया। **बिहार में गायकों द्वारा यंत्र संगीत की परम्परा को भी विकसित किया गया जिसमें सितार, मृदंग, पखावज और इसराज के भी चोटी के गायक यहाँ हुए।** सितार वादन में दरभंगा के पाठक घराने की उपलब्धियाँ उल्लेखनीय है। अवध पाठक, बलराम पाठक, रामेश्वर पाठक, रामगोविन्द पाठक तथा देवराज मिश्र इस घराने के प्रमुख वादक है। ऐसी किंवदन्ती हैं कि विश्व विख्यात सितार वादक पंडित रविशंकर अपने गुरू अलाउद्दीन खाँ के साथ दरंभगा आये थे। गया के चंद्रिका दूबे को इसराज वादक में महारत हासिल था। वे छः राग और तीस रागनियों की राग माला प्रस्तुत करते थे। तबला वादन में उस्ताद कदर अली और सुलेमान खान तथा सारंगी वादन के क्षेत्र में बहादुर हुसैन और अता हुसैन ने विशेष उपलब्धि हासिल की।

पखावज

मृदंग

इसराज

सितार

तबला

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

8वीं सदी से 12वीं सदी ईस्वी में बिहार की माटी-पानी से जुड़े सिद्धसंत सरहपा, शबरपा, भूसुकपा, वीणापा, कान्हपा, लुइपा आदि केवल उपदेशक, मतप्रचारक या साधक ही नहीं थे, इनमें विलक्षण कवि-प्रतिभा थी तथा वे उच्च कोटि के संगीतज्ञ भी थे। इनके पद अक्सर राग-रागिनी में आबद्ध मिलते हैं। अनेक पदों में किसी राग या रागिनी का स्पष्ट निर्देश किया गया है। जिन राग-रागिनियों का उल्लेख इनके पदों में अक्सर मिलता है। उनमें कुछ के नाम हैं– **देसाख, भैरवी, पटमंजरी, कामोद, गड़बा (गौड़ का अपभ्रंश), देवकी, गुर्जरी, मल्लारी, बराड़ा, धनछी इत्यादि।** सरहपा के शिष्य शबरपा के राग बलाड्डी तथा नालंदा के समीप रहने वाले सिद्ध कवि भूसुक के राग मल्लोही में पद मिलते हैं। बलाड्डी तथा मल्लोहि राग का उल्लेख अन्यत्र नहीं मिलता है। सम्भव है बलाड्डी और मल्लोही राग बरारी तथा मल्लार हो।

सरहपा विक्रमशिला के रहने वाले थे। सरहपा अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में नालंदा में रहे। विद्यापति के गीति पदों में भी अधिकतर इन्हीं राग-रागिनियों का निर्देश किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि सिद्धों की वाणी का प्रभाव विद्यापति पर है।

मध्यकाल में सूफियों ने संगीत का संवर्द्धन अपने अनुसार किया। चिश्ती परम्परा द्वारा संगीत का प्रचार हुआ। बिहार में शेख निजामुद्दीन चिश्ती के खलीफा ख्वाजा करीमुद्दीन बयाना थे। शेख की मृत्यु के पश्चात मुहम्मद तुगलक ने उन्हें गया जिले के सतगांवा का इलाका जागीर स्वरुप दिया। शेख निजामुद्दीन चिश्ती के उत्तराधिकारी ख्वाजा नसीरुद्दीन महमूद ''चिरागे देहली'' के पीर भाई ख्वाजा मखदूमअली सिराज की सिराजिया परम्परा ने बिहार में इन्द्रप्रस्थ मत का प्रचार किया। अमीर खुसरो, शेख निजामुद्दीन चिश्ती के मुरीद थे। खुसरो ईरानी रागों को भारत में प्रचलित करना तथा भारतीय रागों को मुसलमानों में लोकप्रिय बनाना चाहते थे। संगीत सीखने एवं सिखाने के लिए उन्होंने एक ऐसी पद्धति का निर्माण करने का प्रयास किया जिसमें ईरानी और भारतीय रागों का वर्गीकरण एक ही ढंग से हो सके। कालान्तर में यही पद्धति उत्तर भारत में ''ठाठ'' पद्धति कहलायी। भारतीय रागों के वर्गीकरण के मुस्लिम आधार को 19वीं सदी में इन्द्रप्रस्थ मत कहा गया। यह एक ऐसी उद्भावना है जो आज भी समस्त भारत में प्रचलित है। मध्ययुग में सूफियों ने इसका प्रचार बिहार में भी किया।

बिहार के सूफी संत सर्फुद्दीन अहमद मनेरी जिनका जन्म 1262 ई. में मनेर नामक स्थान में तथा मृत्यु 1377 ई. में बिहारशरीफ में हुआ एक भावुक हृदय के संगीत प्रेमी व्यक्ति थे। वे सोम गायन (धार्मिक, आध्यात्मिक गान) बड़े चाव से सुना करते थे। ये ऐसे मुस्लिम सूफी संत थे जो बिहार की भाषा एवं संगीत के बहुत करीब थे तथा संगीतकारों को प्रश्रय देते थे। ये कंठ-संगीत तथा यंत्र-संगीत दोनों का आनंद लेते थे। इसका जिक्र इनके शिष्य मुजफ्फर शम्स बाल्खी ने अपने मकतुबल के 121वें पत्र में किया है।

बाल्खी किसी हिन्दू योगी का उल्लेख करते हैं कि वह एकतारा लिये है जो मृगावती में उल्लिखित नाथ योगियों के किंगरी से भिन्न है। वह लिखते हैं कि एकतारा पर जब वह योगी हिन्दवी दोहा गाता है तो महान् सूफी-संत मुनेरी भाव-विभोर हो उठते हैं। दोहा है **''एकत कंडी विध भूतर भर के कायनचित किन मन रंझिया (या रझिया) मारन ततही नहाय''।** सूफी

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

Special Issue

संतों के संगीत से आत्मीय लगाव के अनेक दृष्टांत मिलते हैं। संत मनेरी 'सोम' धार्मिक गोष्ठियों एवं प्रवचनों में गाए जाने वाले भजन या आध्यात्मिक गान (गायन) बड़े चाव से सुनते थे। ये मुस्लिम सूफी-संत यहां की भाषा एवं संगीत के बहुत समीप थे और संगीतकारों को पूर्ण प्रश्रय प्रदान करते थे। कहते हैं, **संत सर्फुद्दीन अहमद मनेरी की दरगाह पर तानसेन भी आए थे।**

Special Issue

NEXT TOPIC ?

बिहार के सांगीतिक घराने...

By

NUTAN SHUKLA

Co-Writer- **बिहार: सामान्य विवरणिका**

BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

NEW DELHI - *110084*

What's app No.- 9355167891 Facebook:- BIHAR NAMAN

Telegram Link:- http:t.me/biharnaman

Email Id:- biharnaman@gmail.com

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE